International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(3): 22-24

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(3): 22-24
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-03-2016
Accepted: 16-04-2016

Mamta Tripathi
Atarra P.G. college
(Bundelkhand University
Jhansi) India.

Correspondence
Mamta Tripathi
Atarra P.G. college
(Bundelkhand University
Jhansi) India.

भास के नाटकों में नाटकीय अन्विति

Mamta Tripathi

सार
भास नाटकों में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की भावना की अवधारणा जिसमें जनसामान्य की भावना की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मिलती है, साथ ही भास्य के नाटकों में जनसामान्य की रसानुभूति के साथ–साथ सर्वोत्तम ज्ञान का मनोरंजक साधन भी उपलब्ध है।

कूटशब्दः अनुस्यूत– ख्अनु+सिव्+क्त्–ऊठ, नियमित तथा निर्बाध रुप से मिला कर बुना हुआ।
मसृण– ख्क्रृण (दीप्ति)+क, पृषो0 साधुः, स्निन्ध, चिकना–मसृण चंदनचंर्चितांगी–चौर0 6, या सरस मसृणमपि मलयजपंकम्–गीत0 82 मृदु, कोमल सरल–उत्तर0 1/38 3. सौम्य, मृदु, मधुरमसृण वाणि–गीत. 10. 4 , प्रिय, मनोहर.–विनयमसृणो वाचि नियमः– उत्तर. 2/22, 4/21, 5–चमकीला. उज्ज्वल–मा0 1/29, 4/2, –णा आलसी
कीर्ति कौमुदी–(स्त्री0) ख्कृत+क्तिन्, 1. यश, प्रसिद्धि, कीर्ति–इह कीर्तिमवाप्नोति–मनु0 2/29, ख्कौमुद+ङीप, 1. चाँदनी–शशिना सह याति कौमुदी–कु 4/33 , शशिनमुपपगतेयं कौमुदी मेघ–मुक्तम् – रघु0 6/85।

नाटककार भास
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की भावना से अनुप्राणित संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का उत्कृष्ट वाहक है। देववाणी संस्कृत भाषा अपने वृहद् इतिहास में अत्यन्त महत्व शालनी रही है। कालान्तर में चिन्तकों एवं साहित्यकारों के संरक्षण में उसके स्वरुप का परिपोषण एवं पल्लवन हुआ। फलस्वरुप संस्कृत साहित्य विश्व–साहित्य के शीर्ष पर प्रतिष्ठित हुआ।
ऋषियों, मुनियों एवं मनीषा से अनुस्यूतज्ञान संस्कृत भाषा के माध्यम से ही प्रकट हुआ है। महाकवियों ने जनसामान्य की भावना की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए इस भाषा को सर्वोत्तम माना है।
कालान्तर में संस्कृत साहित्य की जो अविरल धारा प्रवाहित हुई, उसमें नाट्य रुपकों को विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ, क्योंकि रुपक, श्रव्य एवं दृश्य दोनों प्रकार के काव्यों का मिश्रण है। इसीलिए वह जनसामान्य की रसानुभूति का सर्वोत्तम साधन बन पड़ा है। भारतीय भावना सदा से आदर्शोन्मुख रही है। अतः संस्कृत नाटककार भी आदर्शवाद के पक्षपाती हैं।
संस्कृत नाट्य साहित्य में तेरह नाटकों के प्रणेता भास एक ऐसे नाट्य शास्त्री हैं, जिनकी कीर्ति प्रौढ़सरस और एक सरल नाटककार के रुप में संस्कृत नाट्य साहित्यकाश आसेतु हिमालय और पूर्व सागर से पश्चिम सागर तक भास की मसृण कीर्तिकौमुदी काल की बाधा को बाधित करती हुई विगत प्रायः दो सहस्वर्षों से निरन्तर सहृदयों का ह्रदयाकर्षण करती आ रही है। संस्कृत के महान नाटककार कालिदास के मालविकाग्निमित्रम् नामक नाटक के आरम्भ में भास का एक प्रसिद्ध और यशस्वी नाटककार के रुप में उल्लेख किया गया है।

"प्रथित यशसां भाससौमिल्लकवि –
पुत्रादीनां प्रबन्धातिक्रम्य वर्तमान कवेः
कालिदासस्य क्रियायां कथं बहुमानः"।।
(मालविकाग्निमित्रम्। कालिदास। प्रथमोङ्कः)

भास के नाटकों में नाटकीय अन्विति

भास के नाटकों की वस्तु का क्षेत्र विविध है और यह विविधता भास की प्रतिभा की मौलिकता को व्यक्त करती हैं। पर इतना होते हुए भी भास के सभी नाटकों का कथा संविधान बहुत शिथिल है, तथा वह भास की नाटकीय कुशलता का परिचायक नहीं कहा जा सकता जबकि उन्होंने महाभारत से संबद्ध इतिवृन्तों में विशेष दिलचस्पी दिखाई है। किन्तु भास को सबसे अधिक सफलता उदयन की 'रोमैंटिक' कथा से संबद्ध नाटकों में मिली है तथा स्वप्नवासवदन्तम् नाटक एवं प्रतिज्ञा यौगन्धरायण नाटक भास के नाटकों में निश्चित रुप से उच्चकोटि के नाटक हैं।

राम के इतिवृत्त को लेकर लिखे गये दोनों नाटकों अभिषेक नाटक तथा प्रतिमानाटक में भास ने किसी मौलिक नाटकीय प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं किया है। इन नाटकों को पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि इनके संविधान में नाटककार ने कौतूहल वृत्ति को उत्पन्न नहीं किया है, जो नाटक की प्रभावात्मकता के लिए अव्यावश्यक है। इन दोनों नाटकों में रामायण की कथा का ही शुष्क संक्षेपण है, जिसे मंच के उपयुक्त बना दिया गया है। नाटककार ने रामायण की मूल कथा में कुछ परिवर्तन किये हैं, किन्तु वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। सुग्रीव तथा बालि के द्वन्द्व युद्ध को दो बार हुआ न बताकार एक ही बार हुआ बताया गया है। राम के द्वारा बिना किसी कारण के बालि का वध करना; राम के चरित्र को दोषयुक्त बना देता है।

''रामः–हनूमन्,अलमलं सभ्रमेण। एतदनुश्ठायते। (शरंमुक्त्वा) हन्त पतितो वाली।[2)]

यहाँ यह कह देना अनावश्यक न होगा, कि बाद के संस्कृत नाटककारों ने राम के चरित्र से इस दोष को हटाने के लिए मौलिक उद्भावनाएँ की हैं। भवभूति के महावीर चरित नाटक में वर्णित तारा विलाप भास के अभिषेक नाटक में नहीं पाया जाता नेपथ्य से तारा के रोने की आवाज आती है, पर बालि उसे मंच पर आने से मना कर देता है। वह यह नहीं चाहता कि तारा उसे मरते हुए देखे।

''वाली–सुग्रीव, संवार्यतां संवार्यतां स्त्रीजनः। एवं गतं नाहंति मां द्रष्टुम्।।''[3)]

अभिषेक नाटक में बालि की मृत्यु मंच पर ही दिखाई गयी है, जो नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध ज्ञान पड़ती है।

प्रतिभा नाटक का क्षेत्र अभिषेक नाटक की अपेक्षा विशाल है। इस नाटक में कवि ने दो–तीन मौलिक उद्भावनाएँ की हैं। ''भरत को सीता हरण का पता पहले ही चल जाता है।

सुमन्त्रः– सीता माया मुपाश्रिव्य राणेन हतो हतः।''[4)]

तथा राम नंदिग्राम में ही भरत से राज्य भार सँभाल लेते हैं और उनका अभिषेक भी वहीं हो जाता है राज्यभिषेक के बाद वे अयोध्या के लिये प्रस्थान करते हैं।

भरतः–कथं हृतेति (मोहमुपागतः)[5)]

इसके साथ ही इक्ष्वाकुवंश के मृत राजाओं की प्रतिमाओं का देवकूल में स्थापित किया जाना भी, भास की निजी कल्पना है, जिसका आधार उस काल में प्रचलित राजकीय परम्परा जान पड़ती है। दोनो नाटकों के पात्रों का चरित्र चित्रण असफल हुआ है, और इन दोनों नाटकों में भास की नाट्य कला का आरम्भिक विकास दृष्टिगोचर होता है।

महाभारत और कृष्ण से सम्बन्धित नाटकों में भास की नाट्यकला विशेष सुन्दर दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि स्वयं कृष्ण–भक्त था।

मध्यम व्यायोग में भीम और घटोत्कच का द्वन्द्व युद्ध तथा भीम को पहचाने बिना उसे हिडिम्बा के पास ले जाना इतिवृत्त में कौतूहल का समावेश कर देता है। दूतघटोत्कच नाटक मे दुर्योधन तथा घटोत्कच के संवाद वीररस से पूर्ण हैं। कर्णधार के द्वारा कवि ने कर्ण के दानशील चरित्र की उज्ज्वलता प्रदर्शित की है। दूतवाक्य में एक ओर दुर्योधन और दूसरी ओर कृष्ण के चरित्रों के वैषम्य को चित्रित किया गया है। दुर्योधन की दलीलों का जो मुँहतोड़ जवाब कृष्ण ने दिया है, वह नाटकीय संवाद को स्वाभाविक एवं मार्मिक बना देता है। श्री कृष्ण के आयुध–सुदर्शन, कौमोदकी, शार्ड़ग, आदि का मंच पर लाना सम्भवतः कुछ आलोचकों को खटक सकता है, विशेषतः सुदर्शन को एक मूर्तिमान् मानवी पात्र के रुप में उपस्थित करना। उसभंग में दुर्योधन तथा भीम के गदायुद्ध का वर्णन है। गदायुद्ध में अनीति बरतने के कारण बलराम भीम पर कुद्ध हो जाते है; किन्तु वे श्री कृष्ण के द्वारा शान्त कर दिये जाते हैं। अन्त में अश्वत्थामा के प्रचण्ड चरित्र को उपस्थित कर कवि ने एक मौलिक उद्भावना की है, जो भरते हुए राजा दुर्योधन को पुनः विजय की आशा दिलाता है तथा पाण्डवों को शत्रि युद्ध में मारने का प्रण करता है। उरुभंग में भी अभिषेक नाटक के बालि की तरह दुर्योधन का देहावसान मंच पर ही हो जाता है। दुर्योधन उरुभंग का नायक नहीं है उसे प्रतिनायक ही मानना ठीक होगा वैसे ही जैसे भटनायक के 'वेणीसंहार' में। पर उरुभंग में दुर्योधन का चरित्र अंकित करने में कवि पूर्णतः सफल हुआ है। दुर्गुणों से युक्त होते हुए भी दुर्योधन क्षत्रियोचित सम्मान के साथ मृत्यु को प्राप्त करता है।

पच्चरात्र नाटक के कथानिर्वाह में कवि ने विशेष दिलचस्पी दिखाई है। महाभारत के विराट पर्व की कथा को कवि ने अपनी कल्पना से नया रुप दे दिया है। इस नाटक में द्रोण के कहने पर दुर्योधन के द्वारा पाण्डवों को आधा राज्य देने का उल्लेख किया गया है। पंचरात्र नाटक में यद्यपि कई नाटकीय दृश्य हैं, किन्तु इतिवृत्त की दृष्टि से वह महाभारत के इतिवृत्त जैसा प्रभावोत्पादक नहीं बन पड़ा है।

''बालचरित नाटक को इतिवृत्त की दृष्टि से हम पूरा नाटक न कहेंगे। श्री कृष्ण के बालचरित से सम्बद्ध कई घटनाओं को यहाँ एक साथ रखकर नाटकीय रुप दे दिया गया है। नाटक में कुछ कल्पनाएँ की गई हैं जैसे कंस के स्वप्न में चाण्डॉल युवतियों का आना या मंच पर राज्यलक्ष्मी और शाप का मूर्त पात्रों के रुप में उपस्थित होना'', [6)] किन्तु इनसे नाटक की प्रभावोत्पादकता नहीं बढ़ी हैं।

दूतवाक्य नाटक की ही तरह कृष्ण के आयुध यहाँ भी मूर्त रुप में मंच पर प्रविष्ट होते हैं तथा अरिष्ट दैत्य का बैल के रुप में आने पर और मानवी पात्र की तरह व्यवहार करना खटकता है। डॉ0 कीथ का अनुमान है कि अरिष्टनेमि का पात्र मंच पर केवल कृत्रिम वेश में ही आता था, और उसकी उक्ति से सामाजिकों को यह कल्पना कर लेनी पड़ती होगी कि वह बैल है। ठीक यही बात कालिय के पात्र के विषय में भी कही जा सकती है, जो मंच पर उपस्थित होता है।

डॉ0 कीथ का मत है कि बालचरित नाटक में भास की मौलिक प्रतिभा प्रकट हुई है, किन्तु हमें डॉ0 डे का मत ठीक जाँचता है, जो बालचरित को निर्दुष्ट नाटक नहीं मानते हैं। वस्तुतः नाट्यकला की दृष्टि से बालचरित में व्यापारान्विति का अभाव दिखाई पड़ता है।

अविमारक नाटक की कथावस्तु किसी लोककथा पर आधृत है। इस नाटक में किसी ऋषि के शाप से राजकुमार अविभारक अन्त्यज के रुप में परिवर्तित हो जाता है। इसी रुप में उसका प्रेम कुंतिभोज की पुत्री कुरंगी से हो जाता है। पर अविमारक नाटक के नायक के द्वारा दो तथा नायिका के द्वारा एक बार आत्महत्या करने का प्रयत्न, कथा की प्रभावोत्पादकता में बाधा डालता है। भास ने प्रतिज्ञायौगंधरायण की भाँति यहाँ भी विदूषक की उद्भावना की है, किंतु अन्त्यज बने नायक के साथ विदूषक की संगति ठीक बैठती नहीं जान पडती। नारद को उपस्थित कर नायक नायिका का विवाह करवाना निरर्थक प्रतीत होता है। यद्यपि डॉ0 कीथ अविमारक को प्रेमकथा के आधार पर सुंदर नाटक मानते हैं।, जिसकी अभित्यंजना तथा घटना अप्रौढ़ है, किंतु अविमारक में कहीं कहीं इतनी अधिक भावावेशता चित्रित की गयी है, कि वह नाटक के सौन्दर्य को विकृत कर देती है। 'दरिद्रचारुदत्त' नाटक में चारुदन्त तथा बसन्तसेना के प्रणय का 'रोमानी' वातावरण चित्रित है।

स्वप्नवासवदन्तम् नाटक तथा प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक निश्चित रुप से भास के उच्च कोटि के नाटक हैं। इन दोनों नाटकों में कवि ने उद्यन की अर्धेतिहासिक कथा को लिखा है, जिसे बाद में हर्श ने भी रत्नावली तथा प्रिय दर्शिका नाटिकाओं में आधार बनाया है। प्रतिज्ञा यौगन्धरायण में महासेन के द्वारा बंदी बनाये हुए उद्यन के द्वारा वासवदन्ता को भगा ले जाने की कथा है, किंतु उद्यन तथा वासवदन्ता दोनो की नाटक के पात्रों के रुप में नहीं आते। नाटक का प्रमुख पात्र यौगन्धरायण है, जो अपनी नीति से उदयन को महासेन के बंदीगृह से छुड़ाने तथा उसका वासवदन्ता से परिणय कराने में सफल होता है। विशाखदत्त के मुद्राराक्षस नाटक की भाति प्रतिज्ञा यौगन्धरायण नाटक भी राजनीतिक चालों से भरा हुआ नाटक है। किन्तु जहाँ मुद्राराक्षस राजनीतिक नाटक है; वहीं प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक में उद्यन और वासवदत्ता की प्रणयकथा के 'रोमानी' ताने बाने को बुन दिया गया है।

आलोचकों में प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक में कृत्रिम हाथी के छल से उद्यन को पकड़े जाने की उद्भावना को और महासेन के द्वारा प्रथम तो उद्यन का आदर करने, किंतु बाद में निष्कारण श्रंखलाबद्ध कर दिये जाने की कल्पना को दोषपूर्ण माना है। इतना होने पर भी नाटक में यौगन्धरायण का स्वामिभक्त चरित्र अत्यधिक प्रभावशाली है जो स्वामी के लिये प्रत्येक बलिदान करने को प्रस्तुत है। महासेन प्रद्योत के राजभवन का दृश्य तथा त्रतीय अंक का विदूषक और उन्मत्तक का वार्तालाप नाटक को मनोरंजक बनाने में सहायता करते हैं।

स्वप्नवासवदन्तम् नाटक का घटनाचक्र विशेष कुशलता से निबद्ध किया गया है। इसमें कार्यान्विति का पूर्ण पूर्ण ध्यान रखा गया है, तथा प्रभावात्मकता पूर्णतः पाई जाती है। कवि ने लोककथा को लेकर अपने ढंग से सजाया है। नाटक की दोनों नायिकाओं वासवदत्ता और पदमावती के चरित्रों को स्पष्ट रुप से निजी व्यक्तित्व प्रदान किया गया है। भास के स्वप्न वासव दत्तम् नाटक का उद्यन पूर्णतः दक्षिण नायक है। वह वासवदत्ता के जल जाने पर भी उसे नहीं भूल पाता। वासवदत्ता के चरित्र को चित्रित करने में कवि ने बड़ी सावधानी और कुशलता बरती है। वासवदत्ता अपनी वास्तविकता को छिपाकर अपने पति के पराक्रम के लिए अपूर्व त्याग करती है। यौगन्धरायण के कहने से वह अपने को आग से जलने की खबर फैलाकर मगध राज के अन्तःपुर में पदमावती के पास रहना स्वीकार करती है तथा पदमावती के साथ उद्यन का विवाह होने देती है। यही नहीं, वह अपने आपको उद्यन के समक्ष प्रकट होने से बचाती है। नाटक अत्यधिक भावात्मक है, किंतु कवि ने यहाँ अविमारक की तरह 'मेलोड्रेमेटिक' तत्व का समावेश न कर नाटक की प्रभावोत्पादकता को अक्षुण्ण बनाये रखा है। वैसे वासवदत्ता के न मरने का पता सामाजिकों को आरम्भ में ही चल जाता है, जो नाटक की कौतूहलवृत्ति को समाप्त कर देता है। पर ऐसा भी माना जा सकता है कि नाटककार स्वयं 'वासवदत्ता जली नही है' इस भावना को सामाजिकों में आरम्भ से ही उत्पन्न कर देना चाहता है और यहाँ वह 'नाटकीय आश्चर्य' के स्थान पर 'नाटकीय अपेक्षा' की योजना करता जान पड़ता है। यद्यपि स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का नाटकीय संविधान प्रौढ़ नहीं है, तथापि इसके निर्वाह में नाटककार का महान् व्यक्तित्व प्रकट होता है राजशेश्वर का यह कहना कि 'भास के नाटकों को परीक्षार्थ आलोचना की अग्नि में फेंके जाने पर भी स्वप्नवासवदत्तम् जलाया नहीं जा सका उचित जान पड़ता हैः–

''भासनाटक चक्रेऽपिच्छेकैः परीक्षितुम्।[7]
स्वप्नवासवदन्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः।।''
काव्यमीमांसा। राजशेखर

इससे सिद्ध होता है कि भास संस्कृत के एक महान् और यशस्वी नाटककार है और उनकी नाटकीय अन्विति प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मालविकाग्निमित्रम्। कालिदास। ।
2. अभिषेक। अंक1 पृ0 325।
3. अभिषेक। अंक1 पृ0 326।
4. प्रतिमानाटका अंक, 4
5. प्रतिमानाटक। अंक 4, पृ0 306
6. बालचरित। द्वितीयअंक। पृ0 525–29
7. काव्यमीमांसा । राजशेखर।